



VISION IAS

www.visionias.in

P175

विश्व इतिहास - 1 सामान्य अध्ययन



णमो आयरियाणं

PlusPramesh eLib

www.pluspramesh.in



VISIONIAS

www.visionias.in

Classroom Study Material

विश्व इतिहास : भाग 1A

Copyright © by Vision IAS

All rights are reserved. No part of this document may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior permission of Vision IAS.

विषय सूची

18वीं शताब्दी से पूर्व का विश्व	6
1. सामंतवाद (Feudalism)	6
1.1. भूमिका	6
1.2. सामंतवाद का विकास क्यों हुआ?	6
1.3. सामंतवाद की विशेषताएं	6
1.3.1. मैनर	7
1.3.2. किसान	8
1.3.3. राजा और सामंत	8
1.4. निष्कर्ष	8
2. चर्च (The Church)	9
2.1. चर्च की बुराईयां	9
3. परिवर्तनशील समय	10
3.1. व्यापार, कस्बों और शहरों का उद्भव	10
3.2. उत्पादन विधि में परिवर्तन: गिल्ड (संघ)	10
3.3. व्यापारी वर्ग के प्रभाव में वृद्धि	10
3.4. पूंजीवादी अर्थव्यवस्था की दिशा में संक्रमण	11
3.5. राजा व्यापारी सांठ-गांठ और किसान विद्रोह	11
4. आधुनिक युग (Modern Era)	11
4.1. पुनर्जागरण और सुधार	11
4.1.1. पुनर्जागरण	11
4.1.2. सुधार आन्दोलन (Reformation)	14
4.2. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का आरंभ	14
4.3. निरंकुश राजतंत्रों का उदय	15
4.4. इंग्लिश रिवोल्यूशन (अंग्रेजी क्रांति)	16
5. वैश्विक सप्त वर्षीय युद्ध (1756-63)	16
5.1. भूमिका	16
5.2. युद्ध के कारण	17
5.3. परिणाम: 1763 की पेरिस संधि	17
6. अमेरिकी क्रांति (1765-1783)	17
6.1. भूमिका	17
6.2. अंग्रेजों के प्रति अमेरिका वासियों के आक्रोश के कारण	17

6.2.1. वाणिज्यिक पूंजीवाद	18
6.2.2. 1763 की घोषणा	18
6.2.3. प्रबुद्ध विचारकों की भूमिका	19
6.2.4. युद्ध (सप्त वर्षीय) व्यय की पुनर्प्राप्ति	20
6.2.5. ब्रिटिश संसद में कोई प्रतिनिधित्व नहीं	20
6.2.6. 1774 का कोएर्सिव एक्ट और फिलाडेल्फिया कांग्रेस	21
6.3. अमेरिकी क्रांति युद्ध या अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम (1775)	22
6.3.1. 1783 की द्वितीय पेरिस संधि	22
6.3.2. अमेरिकी क्रांति की समालोचना	23
7. फ्रांसीसी क्रांति और नेपोलियन के युद्ध	24
7.1. फ्रांसीसी क्रांति के पीछे निहित कारण	24
7.1.1. तीन एस्टेट्स	24
7.1.2. अलोकप्रिय राजतंत्र और वित्तीय कठिनाइयाँ	25
7.1.3. प्रबुद्ध विचारकों की भूमिका	25
7.2. 1789 की फ्रांसीसी क्रांति की घटनाएँ	26
7.2.1. जैकोबियन और नेपोलियन	28
7.3. फ्रांसीसी क्रांति के प्रभाव/रचनात्मक आलोचना	29
7.3.1. पक्ष	29
7.3.2. विपक्ष	30
8. राष्ट्रवाद - उदय और प्रभाव	30
8.1. राष्ट्र की संकल्पना	30
8.2. निरंकुश राजाओं द्वारा दुरुपयोग	31
8.3. क्रांतिकारी विचारकों की भूमिका	31
8.4. औद्योगिक क्रांति और राष्ट्रवाद	31
9. जर्मनी और इटली का एकीकरण	31
9.1. जर्मनी का एकीकरण	32
9.1.1. सामाजिक और आर्थिक स्थिति	32
9.1.2. नेपोलियन के युद्धों और फ्रांसीसी क्रांति की भूमिका	32
9.1.3. लोकतंत्र के अधीन एकजुट करने में विफलता	33
9.1.4. बिस्मार्क के नेतृत्व में एकीकरण: रक्त और लौह की नीति	33
9.2. इटली का एकीकरण	34
9.2.1. 1848 के विद्रोहों की भूमिका	34
9.2.2. प्रधान मंत्री कावूर की बिस्मार्क सदृश नीति के माध्यम से एकीकरण	34
10. औद्योगिक क्रांति	36
10.1. औद्योगिक क्रांति से पहले वस्तुओं के उत्पादन की विधि	36

10.1.1. पुटिंग-आउट प्रणाली	36
10.1.2. कारखाना प्रणाली	36
10.2. औद्योगिक क्रांति क्या है?	36
10.3. इंग्लैंड में ही सर्वप्रथम औद्योगिक क्रांति क्यों?	36
10.4. औद्योगिक क्रांति के घटक	37
10.4.1. वस्त्र क्षेत्र में क्रांति	37
10.4.2. वाष्प शक्ति/स्टीम पावर	38
10.4.3. लोहे के उत्पादन में क्रांति	39
10.4.4. परिवहन एवं संचार में क्रांति	39
10.4.5. कृषि क्रांति	40
10.5. औद्योगिक क्रांति का प्रभाव	40
10.6. इंग्लैंड के बाहर औद्योगिक क्रांति का प्रसार	42
11. उपनिवेशवाद की परिभाषा	43
12. उपनिवेशवाद का इतिहास	43
12.1 भौगोलिक खोज या अन्वेषण की भूमिका	43
12.2. तकनीकी नवोन्मेष	45
13. औपनिवेशीकरण (Colonization)	46
14. उपनिवेशवाद का प्रभाव	47
15. उपनिवेशवाद और वाणिज्यिक पूंजीवाद में संबंध	48
16. उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद के बीच अंतर	48
17. नव साम्राज्यवाद (New Imperialism) की परिभाषा	49
18. नव साम्राज्यवाद का इतिहास	50
19. अफ्रीका में उपनिवेशवाद	52
19.1. अफ्रीका के लिए फ्रांसीसी संघर्ष	54
19.2. अफ्रीका के लिए ब्रिटिश संघर्ष	55
19.3. अफ्रीका के लिए जर्मनी का संघर्ष	55
19.4. अफ्रीका के लिए इटली का संघर्ष	55
19.5. अफ्रीका पर उपनिवेशवाद के प्रभाव	56
19.5.1. औपनिवेशिक श्वेत लोग कुलीन बन गए और उन्होंने देशी अश्वेतों का शोषण किया	56
19.5.2. दासप्रथा	56
19.5.3. औपनिवेशिक शक्तियों द्वारा जनसंहार	57
19.5.4. बांटो और राज करो की नीति से स्वतंत्रता पश्चात् समस्याएं	57
19.5.5. शिक्षा और स्वास्थ्य की अत्यधिक उपेक्षा	57

19.5.6. आर्थिक विकास की क्षति	58
20. प्रशांत महासागर क्षेत्र में उपनिवेशवाद	58
21. मध्य और पश्चिमी एशिया में उपनिवेशवाद	59
22. चीन में साम्राज्यवाद	60
22.1. चीन की घटनाओं का विवरण	61
22.2. प्रथम एवं द्वितीय अफीम युद्ध (1840-42 और 1858)	61
22.2.1. 1858 में अमूर नदी के उत्तर का क्षेत्र रूस को सौंपना पड़ा	62
22.2.2. मांचू राजवंश और वॉरलॉर्ड युग	62
22.2.3. पांच प्रमुख घटनाएँ	63
22.2.4. प्रथम विश्व युद्ध (1914-19)	64
22.2.5. वॉरलॉर्ड्स युग (1916-28)	64
22.2.6. 4 मई का आंदोलन (1919)	64
22.2.7. कोमिन्तांग और सन यात सेन	65
22.2.8. च्यांग काई शेक	65
22.2.9. चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (1921 के बाद)	65
23. साम्राज्यवादी जापान	67
24. साम्राज्यवादी संयुक्त राज्य अमेरिका	70

18वीं शताब्दी से पूर्व का विश्व

18वीं एवं 19वीं शताब्दी की घटनाओं को समझने के लिए 18वीं शताब्दी से पूर्व की घटनाओं को समझना आवश्यक है। 18वीं शताब्दी के प्रारंभ की कुछ प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार थीं:

- इंग्लैंड में सामंतवाद का अंत (यूरोप के शेष भागों में सामंतवाद का अंत बहुत बाद में हुआ)।
- शहरों और कस्बों की संख्या में वृद्धि।
- व्यापार में वृद्धि।
- भूमि आधारित अर्थव्यवस्था (सामंतवाद) का मुद्रा आधारित अर्थव्यवस्था में संक्रमण।
- व्यापारी वर्ग और निरंकुश सम्राटों का उदय (*इंग्लैंड में आंशिक लोकतंत्र था और 1688 की गौरवपूर्ण क्रांति के बाद, राजशाही की बजाय संसद की सर्वोच्चता थी)। कैथोलिक चर्च की शक्ति में ह्रास हुआ।
- वाणिज्यिक पूंजीवाद का उदय।
- इंग्लैंड और फ्रांस की प्रतिद्वंद्विता चरम पर।

1. सामंतवाद (Feudalism)

1.1. भूमिका

- 600 ई. से 1500 ई. तक की अवधि को यूरोपीय इतिहास में मध्य युग या मध्यकाल की संज्ञा दी गयी है। विशेष रूप से पश्चिमी यूरोप में इस अवधि के दौरान कई सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन हुए। मध्यकाल के दौरान पश्चिमी यूरोप में ऐसी सामाजिक व्यवस्था विकसित हुई जो शेष विश्व से बहुत भिन्न थी। इसे 'सामंतवाद' के नाम से जाना जाता है।
- सामंतवाद शब्द 'feud' शब्द से निकला है, जिसका अर्थ 'भूमि का सशर्त स्वामित्व' होता है। सामंतवाद ऐसी नई सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था थी जो मध्यकाल (600-1500 ईस्वी) में पश्चिमी यूरोप में तथा आगे चलकर यूरोप के अन्य भागों में प्रचलित हुई।
- इसके अंतर्गत, समाज में वर्गों का विभाजन कठोर था, राजनीतिक रूप से देखें तो यहाँ कोई केंद्रीय शक्ति नहीं थी और ग्राम आधारित अर्थव्यवस्था का प्रचलन था। इस प्रकार ग्राम आधारित अर्थव्यवस्था वस्तुतः आत्मनिर्भर थी और अधिशेष उत्पादन बहुत कम था जिससे व्यापार की संभावना न्यून हो गयी थी। अतः व्यापार एवं शहरों के पतन को इसकी एक विशेषता के रूप में देखा गया है।
- सामंतवाद के अंतर्गत केंद्रीय राजनीतिक शक्ति के अभाव के कारण बहुत सारे सामंतों का राजनीतिक वर्चस्व कायम था जो राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक मामलों को नियंत्रित करते थे। इस समय राजा बहुत शक्तिशाली नहीं था। सामंत किसानों का शोषण करते थे और 'सर्फडम' सामंतवाद की महत्वपूर्ण विशेषता बन गई थी। इसके अतिरिक्त, यूरोप में चर्च का प्रभाव धार्मिक मामलों से परे भी विस्तृत था।

1.2. सामंतवाद का विकास क्यों हुआ?

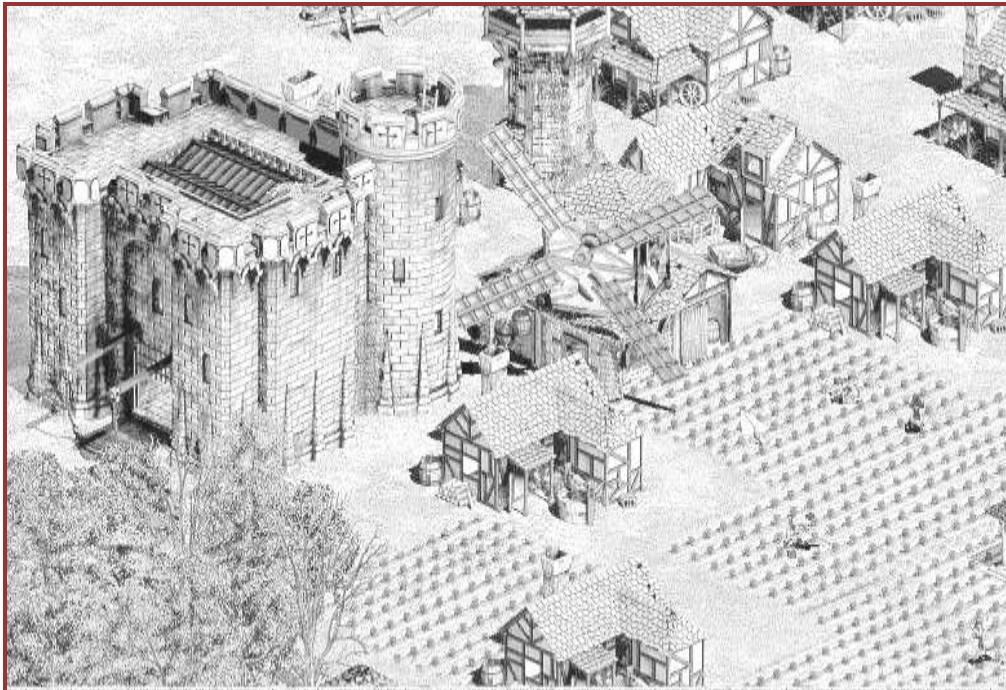
- पश्चिमी यूरोप में केंद्रीय राजनीतिक शक्ति के अभाव के कारण सामंतवाद का विकास हुआ क्योंकि इस समय पश्चिमी यूरोप कई छोटे और बड़े राज्यों में बिखर गया था। ऐसी व्यवस्था में स्थानीय सामंत राजा की तुलना में अधिक शक्तिशाली हो गए और सामाजिक मामलों को नियंत्रित करने लगे।

1.3. सामंतवाद की विशेषताएं

- सामंती व्यवस्था में अर्थव्यवस्था ग्राम आधारित थी और ये ग्राम आत्मनिर्भर थे। इस अवधि के दौरान कस्बों के साथ व्यापार में गिरावट आई। शक्ति का मुख्य स्रोत भूमि थी, न कि मुद्रा।

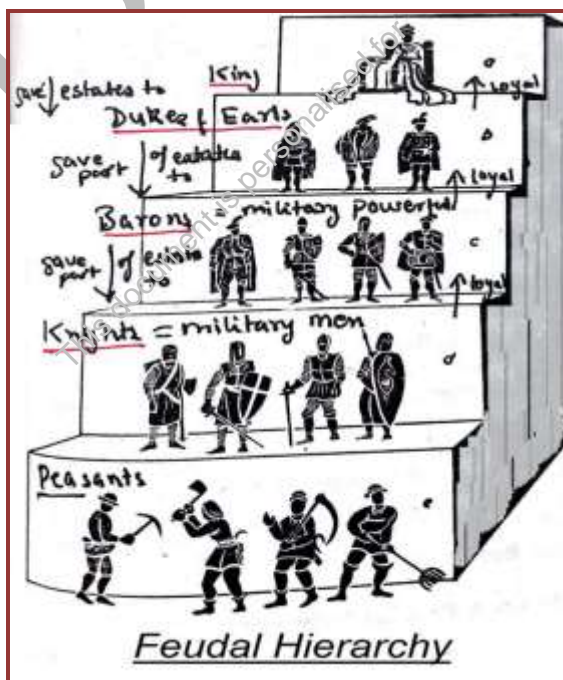


1.3.1. मैनर



- किसान सामंत की भूमि पर काम करते थे, जिसे कई जागीरों या मैनरों में संगठित किया गया था। प्रत्येक मैनर में एक गढ़ (सामंत का घर), किसानों के लिए काम करने हेतु खेत, किसानों के रहने के लिए घर, किसानों के लिए गैर-कृषि वस्तुओं का उत्पादन करने हेतु कार्यशालाएं और लकड़हारों हेतु लकड़ी काटने के लिए साझा जंगल होते थे। मैनर में जो भी उत्पादन होता था, उसका सामंत और निवासियों द्वारा उपभोग किया जाता था, जबकि इसमें से बहुत कम वस्तुओं का व्यापार किया जाता था।
- मैनर के श्रमिकों में सर्फ और काश्तकार किसान सम्मिलित थे। खेत छोटे छोटे भू-खंडों में विभाजित थे। हालांकि भूमि का कुछ भाग काश्तकारों को दिया गया था, जो सामंत को कर के रूप में उपज के एक हिस्से का भुगतान करते थे, शेष भूमि सामंत के अधीन होती थी।

सामाजिक और आर्थिक प्रणाली:



1.3.2. किसान

इस काल में किसान निम्नलिखित में वर्गीकृत थे:

- **सर्फ (Serfs):** सर्फ सामन्त की भूमि पर निःशुल्क काम करते थे और उसकी इच्छानुसार इन्हें सभी कार्य करने पड़ते थे। वे स्वतंत्र नहीं थे और भूमि से बंधे थे। इसका अर्थ यह था कि भूमि स्वामित्व में परिवर्तन होने के साथ ही सर्फ का स्वामी भी परिवर्तित होकर एक सामंत से दूसरा सामंत हो जाता था। इस प्रणाली को **सर्फडम** के नाम से जाना जाता था।
- **स्वतंत्र भू-धारक (Freeholders):** इन्हें सामंत से अपनी भूमि मिलती थी। ये स्वतंत्र होते थे और केवल सामंत द्वारा निर्धारित कर का भुगतान करते थे।
- **कृषिदास या छोटे पट्टेदार (Villeins):** इन्हें भी अपनी भूमि सामंत से मिलती थी। कुछ निश्चित दिन ये सामंत के लिए काम करते थे, अन्यथा ये स्वतंत्र होते थे और अपनी कृषि उपज के एक भाग के रूप में कर का भुगतान करते थे।
- **स्वतंत्र व्यक्ति (Freemen):** ये ऐसे सर्फ थे जिन्हें उनके सामंत द्वारा अपने विवेकाधिकार से मुक्त किया गया होता था।

1.3.3. राजा और सामंत

- सामंती पदानुक्रम में शीर्ष पर राजा होता था। राजा के नीचे सामंत लोग भी अधिपति सामंत और अधीनस्थ सामंतों के पदानुक्रम में व्यवस्थित होते थे। प्रत्येक सामंत केवल अपने अधिपति के मातहत भूमिधर होता था। मातहत होने का अर्थ निष्ठा रखना या निष्ठावान होना होता था, जिसके बदले में उसे कुछ औपचारिक अधिकार मिलते थे। यह पदानुक्रमित प्रणाली अलंघनीय थी क्योंकि अधीनस्थ सामंत केवल अपने तात्कालिक अधिपति के आदेशों का पालन करता था, न कि पदानुक्रम में और ऊँचे सामंतों का। इस प्रकार दोहरे कमान की एक ऐसी व्यवस्था विकसित हुई जिसमें केवल दो क्रमागत स्तरों के मध्य ही विभिन्न प्रकार के संबंध विकसित हुए। राजा केवल ड्यूक और अर्ल को आदेश दे सकता था, जो अपने अधीनस्थ सामंतों को आदेश देते थे। ड्यूक और अर्ल को बैरन से सैन्य सहायता मिलती थी, जो सैन्य जनरलों की भांति होते थे, जो आगे नाइट्स पर निर्भर होते थे जो वास्तविक योद्धा होते थे।
- इसके अतिरिक्त, स्वयं कोई भी सामंत अपने अधीन भूमि का प्रत्यक्ष स्वामी नहीं होता था। वह अपने अधिपति के नाम पर भूमि रखता था। इस प्रकार कानूनी रूप से, सभी प्रदेश राजा के अधीन थे। केवल राजा को सामंत के बेटे को नाइट की पदवी देने का अधिकार होता था, जो तब अपने नाम के साथ 'सर' जोड़ सकता था।
- प्रत्येक सामंत के पास अपने सैनिक होते थे और वह अपनी जागीर का एकमात्र अधिकारी होता था। इस प्रकार कार्यात्मक शब्दों में कोई केंद्रीय शक्ति नहीं थी और राजा केवल कानूनी अर्थों में केंद्रीय शक्ति था। परिणामस्वरूप इस समय राजनीतिक एकता की बहुत कमी थी।
- धीरे-धीरे, यह पदानुक्रम वंशानुगत हो गया। सामंत के पुत्र अगले सामंत बन जाते थे और उनके पिता की जागीर उनकी जागीर बन जाती थी।

1.4. निष्कर्ष

- यह बिल्कुल स्पष्ट है कि सामंती समाज में वर्गों का विभाजन कठोर था जिसमें सामाजिक गतिशीलता के लिए कोई गुंजाइश नहीं थी। राजा के पास कोई वास्तविक अधिकार नहीं था और शक्तिशाली सामंत जनता (जिनमें से अधिकांश लोग किसान थे) के कल्याण के लिए नहीं सोचते थे। अधिकांश उपज सामंतों द्वारा विलासितापूर्ण जीवन जीने में बर्बाद कर दी जाती थी, इस कारण समाज में आर्थिक जड़ता आ गई थी। किसानों के लिए गतिविधियों की कोई स्वतंत्रता नहीं थी क्योंकि वे भूमि से बंधे थे और व्यक्तिगत उद्यमिता की तो कोई सम्भावना ही नहीं थी।



2. चर्च (The Church)



- रोमन कैथोलिक चर्च भी सामंतवादी संस्था जितना ही शक्तिशाली था। जब यूरोप के शासकों ने ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया तो चर्च का नेतृत्व करने वाला पोप, पश्चिमी यूरोप के ईसाई जगत का प्रमुख बन बैठा। छठी सदी से पोप प्रायः राजा की तुलना में अधिक शक्ति रखता था और उससे अपने आदेशों का पालन करवा सकता था। प्रारंभ में, ईसाई चर्च (वह स्थान जहां पादरी रहते थे) उच्च शिक्षा संस्थान थे। पादरी लोगों के नैतिक जीवन और गरीबों के कल्याण के लिए काम करते थे। लेकिन शीघ्र ही चर्च में भ्रष्टाचार फैल गया।

2.1. चर्च की बुराईयां

- शासनकला पर चीनी नियम पुस्तिका, *ताओ ते चिंग* में दो हजार चार सौ वर्ष पहले उपदेश दिया गया था: "प्राचीन लोगों की परिपाटी ऐसी थी जिससे लोगों का ज्ञानवर्धन नहीं हुआ; इससे घृणा करने की बजाय वे इसका उपयोग करते थे; क्योंकि जनता पर शासन करना तब कठिन होता है जब उनके पास बहुत अधिक ज्ञान होता है। इसलिए, ज्ञान के माध्यम से राज्य पर शासन करना राज्य को टूट बना देना है। अज्ञानता के माध्यम से राज्य पर शासन करने से राज्य में स्थिरता आती है।" चर्च ने अपना शिकंजा बनाए रखने में इसी सिद्धांत का उपयोग किया। इसके साथ ही, जैसा कि हम बाद में देखेंगे, लोगों के प्रबोधन या ज्ञानवर्धन की यह शक्ति, अमेरिका और फ्रांस की क्रांतियों को विचारों की क्रांति बनाने में बहुत अधिक महत्वपूर्ण थी।

मध्य युग में (600 ईस्वी से 1500 ईस्वी) चर्च में निम्नलिखित बुराईयों का समावेश हुआ :

- चर्च के पदों के लिए धन।
- प्रत्येक अनुष्ठान के लिए धन।
- पाप धुलने के लिए धन। उदाहरण के लिए, चर्च ने "क्षमा पत्र" बेचना आरंभ कर दिया, जिसे खरीदने पर पाप धुलने के लिए तीर्थयात्रा करने की आवश्यकता नहीं रह जाती थी।
- पोप, नन, बिशप इत्यादि भ्रष्ट हो गए और राजाओं की तरह जीवन जीने लगे।
- चर्च के पास विशाल संपत्ति का स्वामित्व था।
- स्थिति में सुधार करने के लिए, चर्च से जुड़े कुछ लोगों ने घुमन्तू पादरियों को प्रचलित किया। इन पादरियों का घर-बार नहीं होता था और ये आत्म-त्याग और शुद्धता का उदाहरण स्थापित करते हुए आम जनता के बीच यात्रा करते थे। लेकिन शीघ्र ही, वे भी भ्रष्ट हो गए। उदाहरण के लिए, वे किसी भी विवाह को प्रमाणित कर देते थे और धन के लिए सभी पाप धो देते थे।
- मध्यकाल में शिक्षा प्रदान करने वाला एकमात्र संस्थान चर्च था। भविष्य में पादरी बनकर ही इस शिक्षा का उपयोग किया जा सकता था। शिक्षा का माध्यम लैटिन होता था जो आम-जन की भाषा नहीं थी।
- चर्च ने "वर्ष में एक बार" पादरी के सामने पापों की स्वीकृति को अनिवार्य बना दिया था और इस नियम के उल्लंघन पर दण्ड का प्रावधान था।
- तर्क, विवेक और विज्ञान को हतोत्साहित किया जाता था। विज्ञान और इतिहास के विषयों की कोई शिक्षा उपलब्ध नहीं थी। यही कारण है कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी में आगे चलकर होने वाला विकास जाता है। वैज्ञानिक क्रांति के रूप में संदर्भित किया
- अंधविश्वास और जादू-टोने पर लोग बहुत अधिक विश्वास करते थे। चर्च हिंसक हो गया था। इसने उन लोगों को जलाने का आदेश दिया, जो परमेश्वर, धर्म और यहां तक कि भौतिक घटनाओं के संबंध में उसके विचारों का विरोध करते थे। ऐसा "अपधर्म" के आरोप पर किया जाता था। चर्च द्वारा प्रचारित परमेश्वर का महिमामंडन करने वाले सिद्धांतों (जैसे पृथ्वी सपाट है, या सम्पूर्ण ब्रह्मांड पृथ्वी के चारों ओर घूमता है) का खंडन करने वाले वैज्ञानिक सिद्धांतों को प्रतिपादित करने वाले कई वैज्ञानिकों को चर्च के कोप का शिकार होना पड़ा। डायन के रूप में और बुरी आत्माओं से ग्रस्त होने के रूप में पहचाने जाने के बाद उनमें से कईयों को जला दिया जाता था।